सूरह — एक कहानी

सूरह अल-'अस्र

ज़माना

पूरा सफ़र — तीन आयतें जो सब कुछ समेट लेती हैं —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 103 • 3 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

वल्-'अस्र
1. ज़माने की क़सम।

इन्नल्-इंसान ल-फ़ी ख़ुस्र
2. बेशक इंसान ख़सारे में है।

इल्लल्-लज़ीन आमनू
3. सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए।

व 'अमिलुस्-सालिहात
3. और नेक अमल किए।

व तवासौ बिल्-हक़्क़
3. और एक दूसरे को हक़ की नसीहत की।

व तवासौ बिस्-सब्र
3. और एक दूसरे को सब्र की नसीहत की।

वो सूरह जिस पर इमाम शाफ़ई ने कहा

बेटा, यह सूरह तीन आयतों की है — तक़रीबन चौदह लफ़्ज़। और इमाम शाफ़ई (रह0) ने इसके बारे में फ़रमाया: अगर अल्लाह इस सूरह के सिवा और कुछ नाज़िल न करते, तो यह लोगों के लिए काफ़ी थी।

बेटा, इस दावे पर ग़ौर कीजिए। एक ऐसा आलिम जिसने पूरा क़ुरआन हिफ़्ज़ किया था और उसके उलूम में महारत हासिल की थी, यह कह रहा है कि सिर्फ़ ये तीन सतरें वो सब कुछ रखती हैं जो एक इंसान को चाहिए।

और बाज़ सहाबा का मामूल था, जैसा रिवायत में आता है, कि जब उनमें से दो मुलाक़ात करते तो उस वक़्त तक अलग न होते जब तक एक दूसरे को सूरह अल-'अस्र न सुना देता, और फिर सलाम करते। बेटा, इस आदत का तसव्वुर कीजिए: जुदाई से पहले चलो एक बार याद कर लें कि ज़िंदगी का मामला क्या है।

ज़माने की क़सम

'वल्-'अस्र — ज़माने की क़सम।'

बेटा, अल्लाह 'अल-'अस्र' की क़सम खा रहे हैं। उलमा ने इसकी कई तशरीहात कीं: ख़ुद वक़्त, ज़माना, गुज़रते हुए दौर — और कुछ ने कहा कि इसका मतलब दोपहर के बाद का वक़्त है, दिन का वो हिस्सा जब सूरज ढलना शुरू होता है और दिन का ख़त्म होना साफ़ नज़र आने लगता है।

दोनों मानी एक ही मक़सद पूरा करते हैं। वक़्त वो वाहिद सरमाया है जो हर इंसान को बराबर मिलता है — अमीर को भी चौबीस घंटे, ग़रीब को भी — और यही वाहिद सरमाया है जिसे कभी वापस नहीं लिया जा सकता, बदला नहीं जा सकता, ख़रीदा नहीं जा सकता। गया हुआ माल लौट सकता है। गई हुई सेहत लौट सकती है। एक मिनट जो गुज़र गया वो वुजूद से ही ख़त्म हो गया।

और बेटा, एक बात नोटिस कीजिए: अल्लाह वक़्त की क़सम खा कर यह साबित कर रहे हैं कि इंसान ख़सारे में है। गोया वक़्त ही गवाह बन कर खड़ा है। हर गुज़रता लम्हा गवाही दे रहा है: इसे दिया गया, इसने ख़र्च किया, और इसके पास दिखाने को कुछ नहीं।

हसन बसरी (रह0) ने फ़रमाया: ऐ इब्ने आदम, तू तो बस कुछ दिनों का मजमूआ है — जब एक दिन गुज़र गया, तो तेरा एक हिस्सा चला गया। बेटा, इसे महसूस कीजिए। आप वो नहीं हैं जिसके पास दिन हैं; आप दिनों से बने हुए हैं, और वो आप में से ख़र्च हो रहे हैं।

और इसी लिए कुछ उलमा ने कहा कि 'अल-'अस्र' से मुराद दोपहर ढलने का वक़्त है: क्योंकि वही वक़्त है जब इंसान अचानक रोशनी बदलते देखता है और उसे एहसास होता है कि दिन का कितना हिस्सा गुज़र चुका।

इंसान ख़सारे में है

'इन्नल्-इंसान ल-फ़ी ख़ुस्र — बेशक इंसान ख़सारे में है।'

बेटा, इस बारीकी को देखिए। अल्लाह यह नहीं कहते कि इंसान ख़सारे में होगा, या हो सकता है। वो कहते हैं कि वो ख़सारे में है — अभी, इस वक़्त, मुसलसल। और लफ़्ज़ 'फ़ी' — ख़सारे में — का मतलब है उससे घिरा हुआ, उसमें डूबता हुआ, जैसे मछली पानी में।

'ख़ुस्र' तिजारत का लफ़्ज़ है, बेटा। यह ताजिर का नुक़सान है: सरमाया गया, कमाई कुछ नहीं। और यह तशबीह बिल्कुल ठीक बैठती है। हर इंसान को एक सरमाया दिया जाता है — एक ज़िंदगी — और वो हर सेकंड ख़र्च हो रहा है, चाहे वो उससे तिजारत करे या न करे।

और यही ख़ौफ़नाक बात है: आप ख़र्च रोक नहीं सकते। यह ऑप्शन मौजूद ही नहीं कि सरमाया रोक कर इंतिज़ार कर लें। हर साँस एक सिक्का है जो आपके हाथ से जा रहा है। तो सिर्फ़ एक सवाल है कि आप उसके बदले कुछ ख़रीद भी रहे हैं या नहीं।

और ग़ौर कीजिए कि अल्लाह ने 'अल-इंसान' कहा — इंसान, पूरी इंसानियत। एक इंसान की बुनियादी हालत, जब तक कोई चीज़ उसे बचा न ले, ख़सारा है। न्यूट्रल नहीं — ख़सारा।

बेटा, हम आम तौर पर ज़ाया हुए दिन को 'कुछ नहीं हुआ' समझते हैं। यह सूरह इस सोच की तसहीह करती है: ज़ाया हुआ दिन सिर्फ़ नहीं है। वो एक निकासी है। सरमाया खाते से निकल गया और बदले में कुछ नहीं आया।

वो चार चीज़ें जो बचाती हैं

और फिर इस्तिस्ना आता है — बचने का रास्ता — और उसके चार हिस्से हैं। बेटा, इन्हें याद कर लीजिए, क्योंकि यही चार एक बची हुई ज़िंदगी का मुकम्मल निसाब हैं:

'इल्लल्-लज़ीन आमनू — सिवाए उन के जो ईमान लाए।' पहली चीज़ ईमान है: बुनियाद। इसके बग़ैर इमारत के नीचे कुछ है ही नहीं — और इसी लिए क़ुरआन इसे हमेशा पहले ज़िक्र करता है।

'व 'अमिलुस्-सालिहात — और नेक अमल किए।' बेटा, वो ईमान जो सीने में पड़ा रहे

और कभी हाथ पाँव न हिलाए, वो नहीं है जिसका अल्लाह ज़िक्र कर रहे हैं। क़ुरआन में ईमान और अमल हमेशा साथ साथ आते हैं, एक ही चीज़ के दो हिस्सों की तरह।

मगर देखिए, बेटा — अल्लाह दो पर नहीं रुके। अगर सिर्फ़ अपनी नजात का मामला होता, तो 'ईमान लाओ और नेक अमल करो' काफ़ी था। उन्होंने दो और बढ़ा दिए, और दोनों का ताल्लुक़ दूसरों से है:

'व तवासौ बिल्-हक़्क़ — और एक दूसरे को हक़ की नसीहत की।' बेटा, 'तवासौ' एक दो-तरफ़ा फ़ेल है — वो एक दूसरे को नसीहत करते हैं। कोई ख़तीब सामईन को लेक्चर नहीं दे रहा, बल्कि एक ऐसी जमाअत है जिसमें हर कोई हर किसी को याद दिलाता है। आप मुझे ठीक करते हैं, मैं आपको, और हम दोनों सीधे रहते हैं।

और वो 'बिल-हक़्क़' है — हक़ की तरफ़: जो सही है उसकी हौसला-अफ़ज़ाई, और ईमानदारी से किसी को वो बात कहना जो वो सुनना नहीं चाहता मगर उसे सुननी चाहिए। बेटा, यह मोहब्बत की सबसे कम-याब शक्लों में से है। ज़्यादातर लोग आपको वही बताएँगे जो आपको ख़ुश करे। सिर्फ़ वही शख़्स आपकी नाराज़गी का ख़तरा मोल लेगा जो वाक़ई आपकी भलाई चाहता हो।

'व तवासौ बिस्-सब्र — और एक दूसरे को सब्र की नसीहत की।' और सब्र क्यों जोड़ा गया? क्योंकि जिस लम्हे आप हक़ पर जीना और उसे बोलना शुरू करेंगे, आपको मुज़ाहमत मिलेगी — अपने नफ़्स से, मुआशरे से, और उन लोगों से जिन्हें आप पहले वाली हालत में ज़्यादा पसंद थे। सब्र के बग़ैर हक़ पहले ही हफ़्ते में बिखर जाता है।

बेटा, इन चारों का नक़्शा देखिए: पहले दो फ़र्द को बनाते हैं — ईमान लाओ, अमल करो। आख़िरी दो जमाअत को बनाते हैं — एक दूसरे को हक़ याद दिलाओ, और मुश्किल में एक दूसरे को थामे रखो।

और इसी लिए इमाम शाफ़ई (रह0) ने कहा कि यह सूरह काफ़ी थी। क्योंकि यह हर सवाल का जवाब दे देती है: मैं क्या हूँ? एक मख़लूक़ जो ख़सारे में है। मेरा सरमाया क्या है? वक़्त। मुझे क्या बचाएगा? ईमान, अमल, हक़, सब्र। मुझे किसकी ज़रूरत है? ऐसे लोग जो यही कर रहे हों।

बेटा, एक आख़िरी बात। ग़ौर कीजिए कि एक शख़्स ईमान भी रख सकता है और नेक अमल भी कर सकता है — और फिर भी ख़सारे में शामिल हो सकता है अगर वो आख़िरी दो छोड़ दे। वो मोमिन जो अकेला इबादत करता है, अपना इल्म अपने पास रखता है, और अपने आस पास के लोगों को बग़ैर एक लफ़्ज़ याद दिलाए बहने देता है — उसने इस्तिस्ना का सिर्फ़ आधा हिस्सा पूरा किया।

तो यह सूरह, चौदह लफ़्ज़ों में, आपकी पूरी ज़िंदगी का काम आपके हाथ में दे देती है: ख़ुद को बचाइए, और किसी को साथ ले कर चलिए। और ये दोनों सब्र के साथ कीजिए, क्योंकि घड़ी पूरे वक़्त चल रही है।

'वल्-'अस्र' — बेटा, उस वक़्त की क़सम जो अभी गुज़र रहा है जब आप ये सतरें पढ़ रहे हैं।

इस सूरह से क्या सीखा

1. वक़्त वो वाहिद सरमाया है जो सबको बराबर मिलता है और कोई वापस नहीं ला सकता — आपके पास दिन नहीं हैं, आप दिनों से बने हैं।

2. ख़सारा बुनियादी हालत है; ज़ाया हुआ दिन सिर्फ़ नहीं, निकासी है।

3. ईमान बुनियाद है — उसके बग़ैर कुछ खड़ा नहीं रहता।

4. वो ईमान जो हाथ पाँव न हिलाए, अल्लाह ने उसका ज़िक्र नहीं किया: उसे अमल के साथ जोड़िए।

5. अपनी नजात इस्तिस्ना का सिर्फ़ आधा हिस्सा है — दूसरों को याद दिलाना भी लाज़िम है।

6. सच्ची मोहब्बत नाराज़गी का ख़तरा उठाती है: लोगों को वो सच कहिए जो उन्हें चाहिए, और ख़ुद भी सुन लीजिए।

7. हक़ के साथ सब्र जोड़िए, क्योंकि हक़ पर जीने और बोलने पर मुज़ाहमत हमेशा आती है।

या अल्लाह, हमें ख़सारा पाने वालों में से होने से बचाइए — हमें ईमान, नेक अमल, सच्चाई और सब्र अता फ़रमाइए, और ऐसे साथी दीजिए जो हमें याद दिलाते रहें। आमीन।